स्मृति

न्यायमूर्ति श्री नरेन्द्रनाथ मित्थल

6 अप्रैल, 1930 • 7 अप्रैल 1996

---

3 मई, 2008

सुअवसर - मेरठ डिस्ट्रिक्ट बार एसोशियेशन के

125 वर्ष पूर्ण होने का

स्मृति

न्यायमूर्ति श्री नरेन्द्रनाथ मित्थल

उत्तर प्रदेश, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में न्यायमूर्ति-पद पर शोभायमान रहे, स्व. नरेन्द्र जी मित्थल की गणना, मेरठ नगर के उन गिने चुने लोगों में होती है, जिन्होंने अपने कार्यों से मेरठ नगर का नाम ऊँचा किया है।

स्व. नरेन्द्रनाथ जी मित्थल के पिता श्री बृजनाथ जी मित्थल तथा इनके सबसे बड़े भाई श्री रघुवर दयाल जी मित्थल भी व्यवसाय से वकील ही थे तथा अपने-अपने समय के सम्भ्रान्त नागरिकों में गिने जाते थे। इसी मित्थल परिवार में श्री नरेन्द्रनाथ मित्थल का जन्म सन् 1930 में 6 अप्रैल को रामनवमी के दिन हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा एन.ए.एस. स्कूल में हुई और इसके बाद इन्होंने मेरठ कॉलेज से बी.एस.सी. और फिर वहीं से एल.एल.बी. किया।

सन् 1953 में अपने पिता जी, श्री बृजनाथ जी मित्थल के स्वर्गवासी हो जाने पर, अपने परिवार की परम्परा और अपने निवास 'राम बाटिका' की रौनक को बनाये रखने के लिए, श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्थल सदैव प्रयत्नशील रहे। उन्होंने भी वकालत को ही अपना व्यवसाय बनाया, जिससे उनके पिता जी और बड़े भैय्या की सुप्रतिष्ठित परम्परा अटूट बनी रही। इसके साथ ही, पहले जैसे पिता जी के स्वर्गवास के बाद बड़े भैय्या जी श्री रघुवर दयाल जी राम बाटिका का और परिवार का ध्यान रखते थे उसी प्रकार नरेन्द्र जी ने भी उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए अपने छोटे भाइयों की भी यथासम्भव सहायता की और उनका मार्गदर्शन किया। अपने पैतृक संस्कारों और अपने आत्मविश्वास के बल पर श्री नरेन्द्रनाथ जी मित्थल ने लगभग 25 वर्षों तक मेरठ में वकालत की और अपनी न्यायिक सूझबूझ से समाज और न्यायपालिका में अपना ऊँचा स्थान बना लिया। उनकी व्यावसायिक प्रतिष्ठा और स्वच्छ छवि का ही परिणाम था कि सन् 1978 में, उन्हें उत्तर प्रदेश, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में

स्मृति

न्यायमूर्ति श्री नरेन्द्रनाथ मित्थल

न्यायमूर्ति बना दिया गया। मेरठ के इतिहास में यह पहला ही अवसर था जब किसी वकील को न्यायमूर्ति बनाया गया था। वहाँ, उन्होंने सन् 1992 तक कुशलतापूर्वक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया। सन् 1994 में, वे लौटकर मेरठ आ गये और जीवन के अन्त तक ' रामबाटिका' में ही रहे। दैव दुर्विपाक से, ह्रदय गति रुक जाने से 7 अप्रैल 1996 में उनका स्वर्गवास हो गया।

नरेन्द्रनाथ मित्थल जी साहित्य एवं कला-प्रेमी थे और प्रायः पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते रहते। उनके व्यक्तिगत पुस्तकालय में अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक ग्रन्थ संग्रहीत थे। टेबिल टेनिस और बैण्डमिण्टन उनके प्रिय खेल थे तथा साथ ही उन्हें बागवानी का भी शौक था। अपने विभिन्न विषयों के ज्ञान के कारण वे 'विश्वकोश' कहे जाते थे। 1992 में वे विदेश भ्रमण पर भी गये थे। न्यायविद् होने के कारण व्यस्त होते हुए भी वे विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के प्रबन्ध में भी सक्रिय रहे। न्यायमूर्ति नरेन्द्रनाथ जी मित्थल के परिवार में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विमल मित्थल, दो पुत्र-श्री पंकज मित्थल और श्री पल्लव मित्थल तथा दो पुत्रियाँ - पूजा और पूनम हैं। चारों ही पुत्र -पुत्रियाँ विवाहित हैं। बड़े पुत्र श्री पंकज मित्थल, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में न्यायमूर्ति और छोटे पुत्र डॉ. पल्लव मित्थल, एम.ए. पीएच. डी. जयपुर में एक कॉलेज में प्रोफ़ेसर हैं।

श्रीमती विमल मित्थल गाज़ियाबाद के एक प्रतिष्ठित परिवार से हैं तथा इनके पिता जी, श्री आशाराम गर्ग 'जमींदार जी' के नाम से जाने जाते थे। सन् 1957 में, विवाह होने के बाद से ही श्रीमती विमल मित्थल अपने स्नेह और सेवा से मित्थल परिवार को सुखी बनाने में तत्पर रहीं और अभी भी श्री नरेन्द्रनाथ मित्थल जी की स्मृति के सहारे, पूरे मित्थल परिवार की देखभाल में निरन्तर लगी रहती हैं।

स्मृति

न्यायमूर्ति श्री नरेन्द्रनाथ मित्थल

न्यायमूर्ति श्री मित्थल 'हिन्दी भाषा' के प्रति अत्यधिक समर्पित व्यक्ति थे, उन्हें हिन्दी से बहुत प्रेम था, किन्तु इस बात की उनके मन में सदैव वेदना रहती थी कि वह न्यायिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग अपने आदेशों / निर्णयों में नहीं कर सके।

उन्होंने अपनी सेवा निवृत्ति के समय हिन्दी भाषा में दिए गए व्याख्यान में अपनी इस पीड़ा को व्यक्त करते हुए यह सार्वजनिक रूप से घोषित किया था कि वह अपने जीवन के बाकी समय में 'राष्ट्र भाषा हिन्दी' को स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहेंगे और उनका यह मानना था कि बिना निज भाषा के राष्ट्र की कल्पना सम्भव नहीं है।

"जस्टिस नरेन्द्रनाथ मित्थल मेमोरियल फाउण्डेशन"
नरेन्द्रालय, 195-ए, साकेत, मेरठ द्वारा प्रकाशित